

१३८ निर्यातविधि

ASHA ARCHIVES 3496



१. रुलकामूलधूयदिपनेवदसिद्धिर्कर्मनम् ॥ अरुगन्धधूयदिपतम ॥  
 आडाकायजेतातिथिलधूयतम ॥ यानिमूपादिसंयजमानयततननमस्कान्  
 याय ॥ ॥ ॐ ॥

१३८ नित्यवर्षविधि

ASHA ARCHIVES 3496



ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ ॐ नमः शिवाय नमः शिवाय किं  
धीनाथञ्जलं ययानं ययञ्जलं ययञ्जलं ययञ्जलं  
जं यावच्च गुण्यादाम्बुजं यय (लोमि) ॥ ॥ यथा  
कथं वा न ध्यानं विरुद्धि न ध्यानं ध्यानं ॥ जला  
कर्ममादाय वामदक्षजपत् ॥ ॐ ह्रीं यय ह्रीं ह्रीं

ॐ ह्रीं अप्सर्यन्तु यरुता यरुता रुचिर्हृता ॥  
यरुता विद्युक्कलान् स्तनधन्तु विवाह्या ॥  
स्वाहा अस्माय रुद्र ॥ नानाचमूदा ददददिग  
संहल ॥ विद्युमाकरानय ॥ तालश्याददन ३  
॥ धवजवसुचानुयूजा ॥ ॐ ह्रीं वाह्या धियतय



वक्र (वनमः॥ कुंरुं दिग्माहृष्टानमः॥ आसन  
युजा॥ कुंरुं कुंरुं कुंरुं आसासनायनमः॥ कुं  
शासमस्तकालकलासनायनमः॥ आसनान्तिवा  
कुंरुं गंगधयनयनमः॥ ददो॥ कुंरुं कुंरुं गुनूया  
नमः॥ वाम॥ कुंरुं कुंरुं कुंरुं दवरायिनमः॥ म

॥ मूलमन्त्रं ध्यायात्प्राप्ता॥ कुंरुं कुंरुं ॥ ३५  
॥ माहकायासः॥ कुंरुं कुंरुं कुंरुं कुंरुं कुंरुं  
कुंरुं सुनकुंरुं यनकुंरुं दनकुंरुं दानकुंरुं ३ कुंरुं कुंरुं कुंरुं  
कुंरुं आधानचक्रकालानि नूतं ध्यायन्॥ गकिष्ठा  
ने॥ ॥ न्यासः॥ स्वाहा जूष्वा यरुट्॥ कन (धध



न॥ ॐ कनिष्ठायां नमः॥ सिद्धिकवालीञ्जना  
मिकायां नमः॥ क्रीं क्रीं मध्यामायां नमः॥ मूँ  
रुं नऊं नीयां नमः॥ नमः॥ अंगुष्ठायां नमः॥ स्वा  
हाकचकलयुष्ठायां नमः॥ ॐ रुं रुं दयाय नः  
मः॥ सिद्धिकवालीञ्जिनास्वाहा॥ क्रीं क्रीं निखा

येवोषट्॥ मूँ रुं कवचाय ह्रीं॥ नमः॥ ननु ह्याय  
वषट्॥ स्वाहा अम्भाय रुट्॥ ॥ शिवस्त्वाय नमः॥  
ॐ रुं व्यापकमधुलाय नमः॥ मधुलस॥ रुट्  
विमलावर॥ ॐ रुं अग्निमधुलाय नमः॥ रुट्  
॥ शिवसलावर॥ ॐ रुं रुं सूर्याय मधुलाय नमः



४॥ लोचन॥ ॐ ह्रीं मन्त्र ॥ ॐ ह्रीं सैं सां मम धुलाय  
नमः ॥ षंडं (गन यूजा ॥ आवाहनादि ॥ धनू म  
डां ॥ गायत्री धाराय ॥ ॐ ह्रीं कालनाडी विग्रह का  
ल संकर्म धीमहि तन्न ४ कालीयत्रा दयात् ॥ ॥  
धीपाठ यूजा ॥ रुकावगर्हयादासं प्रिकाधमका

धवुरुचतुत्रस्रिगुलाय नमः॥ कौंक्षीर्द्वयो ॐ  
 सनायनमः॥ रुद्रमंत्रिसलावन॥ ॐ रुद्राय  
 कालिकाया नमः॥ रुद्राय नमः॥ रुद्राय नमः॥  
 सलावन॥ रुद्राय नमः॥ रुद्राय नमः॥ रुद्राय नमः॥  
 यन॥ ॐ रुद्राय कालिकाया नमः॥ थन्न



नृसमन्त॥ ॐ ह्रीं गुञ्जकालिकाया नमः पूज  
नी॥ गजमूढान्निकाधवाय॥ हूं हूं हूं हूं हूं हूं  
वत्सायनमः॥ कौं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं  
॥ नं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं  
द॥ मू ॐ लमन्तु ॐ विद्या ॐ लि ३ ॥ मउ

जनपूजा॥ अवाहनारि॥ चन्दनादनमः श्रीनः  
मः॥ शानिमूढा॥ आसपूजा॥ ॐ ह्रीं चन्दनीनमः॥  
ॐ ह्रीं अद्वैतनमः॥ ॐ ह्रीं सिद्धनीनमः॥ हूं पृथ्वीन  
मः॥ ॐ ह्रीं हूं पृथ्वीचन्दमनियनमः॥ ह्रीं वस॥ ॥  
द्वारपूजा॥ ॐ ह्रीं ह्रीं शानिनासयकलगाधेश्वरी

ॐ



यममः॥ ॐ ह्रीं क्लीं म हारु न वाय का ध वट् कः  
शनमः॥ ध व क ह द य स य न म ध्व ना सा न य ॥  
ॐ ह्रीं यु ग मू ष्ठा स ना य न मः॥ ॐ ह्रीं व द मू ष्ठा स  
ना य न मः॥ ॐ ह्रीं दि ग्य ति मू ष्ठा स ना य न मः॥  
ॐ ह्रीं य ञ्च का ता स ना य न मः॥ ॐ ह्रीं र व वा स

ना य न मः॥ ॐ ह्रीं मू ष्ठा स ना य न मः॥ ध्व ना  
व द्का दि य ञ्च क यु ग ध्व ति दि ग्य ती नी मू ष्ठा  
र व वा णि वा य ल या न ले षू णि ष्ठा र्द्ध ण द ह द न च  
द वि द्म मा रु य ध्व ति ती रू ग व ती य न मा द ह ॥  
॥ ॐ ह्रीं रु क्ता ल क यि म द्वा द वी ग न र्द्ध या ग



धनमकनमानवयकितवकी हि लीकृष्णायनम  
नयपार्ति स्वर्गमवालकहि वां किनया विपदा ॥  
ॐ ॐ ॐ ॐ नमः आवाहन स्थापन ॥ ॐ ॐ सैनि  
धान ॥ ॐ ॐ सैनि वाधन ॥ स्वाहा अस्माय रुद्र ॥ न  
द्रा ॥ श्रीरुद्र वचन यद् ॥ अत्र युष्मन् ॥ धनमुद्र

यामृताकवध ॥ यानिमुद्रय समुद्राकवध ॥ या  
धयनिष्ठा लमलसंधुत्वा ॥ आर्द्रा को सादरुसः  
स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ युष्मन् कालिक रुद्र नमः ॥ ॐ ॐ  
॥ ॐ ॐ ॐ नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ मूलमन्त्रं धनिया  
अलि ॥ नय ॥ ३ ॥ ॐ ॐ यानीनमः ॥ ॐ ॐ अर्ध







ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



आय अथा नाम सिद्धौ कौ किनि किनि विजया  
इका॥ धनं वलि॥ वियां जलि॥ नैं कौ ~~वि~~ वि  
को दूमां जान न्द ध कि शे ववान न्द वाना धि  
यत ~~मै~~ यमां धाय धिम मूल लान र हा  
वि ~~मै~~ काय या इका॥ ३॥ धनं व

लि॥ आवारुना पधे नूयानि मूदा॥ ॥  
उग्रव धुया॥ कुं कौ ना यय द कुं उग्रव छ  
विपुम द निहूँ रुं स दा व रुं २ ~~हो~~ मां री स  
४ मृत्पु रु व या इका॥ विध॥ वलि॥ ॥  
विपु व या॥ नैं कौ सो ४ कौ कौ कौ या इका  
५ ५ ५



पूजयामि॥ नमस्कृत्यामि॥ आवाहनादिशानि  
 मूर्त्तौ दधयत्॥ मूलषाठशान प्रियाङ्गलि॥  
 चन्दनसिन्दूरअक्षतपुष्पधूपदीपनेत्रय  
 ताम्बूल॥ जाप॥ ह्रीं स्वाहा॥ १०॥ ह्रीं स्वाहा॥ १०॥ हुं  
 ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमस्वाहा ॥ १०॥ हुं ह्रीं सि  
 २ ह्रीं स्वाहा॥

द्विकजाली ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमस्वाहा॥ १०॥ ह्रीं  
 स्वाहा॥ १०॥ मधुलदयक॥ स्वाहा॥ १०॥ अ  
 र्वधुमलाकालं वार्ययनचलाचलं। त  
 योददक्षिणीयनतमोक्षी गुनूतनमः॥  
 श्रीमहादेवनवाय॥ श्रीदेव्युवाच॥ श्रीहरे



हामधुलान्नकमपदसहितानन्दकिं सुखा  
मा सुखं न्यायचतुर्थं अकूलकूलगतं पक्वैर्वा  
न्यायकं । चत्वारिंशत्पञ्चाशत्पुननपि चतुर्विंश  
हतामधुलेन संसृष्टं यनतस्य नमति युव  
वर्जरुजर्वंधीकृजं ॥ स्यामानका विनवास्तु

नरुजनमितामरुमानं गंगामा विम्बाष्टीचाद्र  
भक्तोपि धृतनजद्यनामखलजल (धरु) देवा  
(जीवन्मु) धरुवनवनकुसुभवव्वनकधरुम  
स्यामं धीकृद्विकास्यावितनजुननसाहानदि  
धायमाद्य ॥ माक (धुया) वियदद्वयदतानुय



यावदालं चक्रकञ्जप्रचक्रितकिञ्च (६) वद्वक्ति  
श्वद्वक्त्यादिस्थाकृदयमुदितसूजनस्तानग  
रुयरावासायंदव्यायिरुवठुरुवता (७) यंघी  
चतुकाया ॥ यासानकामिकुरुन हितिराच  
नूपासामार्कवद्विष्टिप (८) दलमध्वसंस्था ॥

चिञ्चनचिरुविषयाश्चविलीनरावास्वाराव  
रावकपनीयधमासिकाली ॥ मायाकृधुल  
नाक्रियासधूमनीकालीकलीकलामालीनी  
मानंगाविजयाजयारुगवनीदवीनिवाध  
श्वी ॥ धकिं धकनवल्लराहिनयनीवाग्वादि



नीरुपती, क्री काली प्रियुचायनायनमयीमा  
नाकृमाचीत्यसि॥ यथावान॥ नमस्कान॥ नय  
ध॥ विसर्जनयाय॥ ॥ या धयाम॥ न्यास  
॥ नालदय३॥ लथल३॥ संहानमूद्राधवल  
(थयाव, देवसर्क, स्नानकायाव, नाठुदाववा

य॥ ॐ नमः सधुलदयकाव, देवसनिर्मा  
ल्यनय॥ (थयुजन॥ ॐ क्री निर्माल्यावासिनीन  
म॥ स्नानकायावकृय॥ सधुलदयक॥ साः  
दि॥ धीसूर्याय अर्घनम॥ यथीनम॥ निः  
माल्यधवनकारा॥ ॐ तिनिश्चकर्म॥ ॥



कौन्तेनी नमः॥ सौमित्र नमः॥  
 सौमित्र नमः॥ कौन्तेनी नमः॥  
 कौन्तेनी नमः॥ कौन्तेनी नमः॥  
 कौन्तेनी नमः॥ कौन्तेनी नमः॥  
 कौन्तेनी नमः॥ कौन्तेनी नमः॥







ASHA ARCHIVES  
3496



कौं नरु नु य वाषट् ॥ नुं अ सुारुट् ॥ अर्वा  
पुनर् ॥ नुं नु ल पा नो य न म ४ ॥ ओ वा ह ना दि  
ये नु डी द र्ज य ॥ पा तु सा ध न ॥ श्री पा तु स ना  
य न म ४ ॥ नू नू नू नू नू य न मा नू ना य न म ४ ॥  
॥ ३ ॥ नुं श्री गु र श्या म ना य न गुरु श्या य न म

शि मु न श्या न म ४ ॥ अ ल्प पु न न ॥ नू व न्द न  
कौं अ क्त न ॥ श्री सि इ न ॥ श्री पू षा वा इ क्ति ॥  
श्री न म ४ ॥ त र्च न ॥ ॥ द व्या ज्ञा स न ॥ नृ ज्ञा धा ना  
दि ज्ञ वृ य ति का य न म ४ ॥ न क्ता य द्या स ना य न  
म ४ ॥ ध्या न ॥ वा ला र्क म धु ला रा मां व तु वा इ ति



। लाचनं, याज्ञिकं गनं ग्यं व, धानयनि शिवांर  
ज १ ॥ त्रिखलुमूद्रादमेय १ ॥ ॥ आवाक्य  
दन, सिद्धन, यय, धूय, दिय, नैवद ॥ ॥  
त्रियांजलि ॥ त्रिकीर्ती ॥ शायाइकां यूज या मि  
मम १ ॥ ३ ॥ ॥ आवसल यूजनं ॥ गुं गण यत यया  
इकां ॥ शांती वद का य याइकां ॥ शांती अत्र या

लाय याइकां ॥ यायागिर्न्या याइकां ॥ वक्राभा  
दि अष्टमाष्टकसा याइकां ॥ अठियानयिभ  
य २ ॥ जानंधनयिभम २ ॥ यूर्णु गिनायिभम २ ॥  
कामत्रयी (भयनम) ॥ ॥ वलिविय ॥ श्रीग  
ध, वदक, अत्रयालाय, यागिनिस्था सर्व विद्युक्











ॐ ह्रीं २ म ह्रीं स्व तं श्री म ह्रीं ये क ट य २ ह्रीं स्वाहा ॥ गं  
स गी त ३ य न य ३ ॥ मूल म नु ३ ॥ आ वा ह ना दि ॥ या  
नि म ह्रीं ॥ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ॐ अ नु य त न म ॥ ३ ॐ मा न न्दा य त न म ॥ ३ ॐ य खी य न म ॥  
३ ॐ वृ क्षि त न म ॥ ३ ॐ लु क्ति त न म ॥ ३ ॐ ल गि त न म ॥ ३ ॐ ध गि त न म ॥ ३  
ॐ गृ गि त न म ॥ ३ ॐ च न्दी का य त न म ॥ ३ ॐ का गि त न म ॥ ३ ॐ आ स्त्रा य  
न म ॥ ३ ॐ यी गि त न म ॥ ३ ॐ नि ह द्या य त न म ॥ ३ ॐ यूर्ध्व य त न म ॥  
३ ॐ अ यूर्ध्व य त न म ॥ ३ ॐ अ नु गाय त न म ॥ ॥ अतश्चासकना ॥







कलायेनमः॥३०॥कार्तिकलायेनमः॥३१॥चलकलायेन  
मः॥३२॥कृतिकलायेनमः॥३३॥शुक्लकलायेनमः॥३४॥संस्कृ  
तिकलायेनमः॥३५॥निद्रिकलायेनमः॥३६॥वृत्तिकला  
॥नंदीकलायेनमः॥३७॥यलिकलायेनमः॥३८॥  
कलायेनमः॥३९॥गरीकलायेनमः॥४०॥नरि

कलायेनमः॥४१॥कामिकलायेनमः॥४२॥वनकलायेनमः॥  
४३॥कादिकलायेनमः॥४४॥यतिकलायेनमः॥४५॥नंदी  
कलायेनमः॥४६॥वृत्तिकला॥यंतीकलायेनमः॥  
४७॥नंदीकलायेनमः॥४८॥रयाकलायेनमः॥४९॥तिडाक  
लायेनमः॥५०॥तुल्यकलायेनमः॥५१॥कुलकलायेनमः॥



३ न कि या क ला ये न म ॥ ३ लं का धि ती क ला ये न म ॥ ३ वं ड  
को का नी क ला ये न म ॥ ३ गं म ल क ला ये न म ॥ ३ ति न ड क  
ला ॥ ३ वं दी ता क ला ये न म ॥ ३ सें ल्घ ता क ला ये न म ॥ ३  
हं मू ल क ला ये न म ॥ ३ लं वं मा क ला ये न म ॥ ३ हं म ति  
गा क ला ये न म ॥ ३ ति वं ग न क ला ॥ ३ ति वं ति क ला ये न

न म ॥ ३ ज्ये ति क ला ये न म ॥ ३ वि द्या क ला ये न म ॥ ३ ००  
भा ति क ला ये न म ॥ ३ डं ०० न्धि क ला ये न म ॥ ३ डं दी यि का क  
ला ये न म ॥ ३ सें रा यि का क ला ये न म ॥ ३ सें मा यि का क ला ये  
न म ॥ ३ ६ य रा यि का क ला ये न म ॥ ३ ६ म्हा क ला ये न म ॥ ३ ६  
म्हा म्हा क ला ये न म ॥ ३ वं श ना क ला ये न म ॥ ३ डं



कागलु न्यवालिनी वृद्धसूया विरुद्धवियुत विगशखा  
 ॥००॥ तिमनु ज्ञायनिदमकाड ॥१०॥ तिमनु ज्ञायनिदमकाड ॥१०॥  
 श्वनविदमरुसूयाददंधासलि तन्ना कौर्द्धनयुत्रादया ७  
 ॥००॥ तिल्लानन्दगायत्री ० पिर्जहा ॥ उवावीवूव्वो ११ वस्म  
 गयेमाचिगाथेसनादवूतम ४॥ दमकाडय ७॥१०॥ तिमनु



वौं कौं कूँ कौं कौं ३ सुधां क सुभां वं मा वयं जू म तीं थ वयं  
साह ॥ द ग धां जय ॥ १० ॥ गौं गौं गौं गौं गौं ३ सुभां म  
मा चिता ये सुधां द वं नम ४ ॥ द ग धां जय ॥ १० ॥ ॥ वं क  
दय न वं क सुल सुल म य धु वं । क चा रु व वि धु द ह र्यां  
त गं नां ग या म र ॥ १ ॥ स य मं तु ल स र ह त व न ग म ल य म

३ व । जू मा वी ड म य द वि सु कं म द्वा दि म र तां ॥ २ ॥ उं  
द वा नां थि व चा वं उं व द्वा न न्द म य या दि । त न म य न ॥ द  
वि व द्वा रु या वा द रं ॥ ३ ॥ ०० गि मं तु य थ व र म  
कू नि कां वि ड य ॥ ३ ॥ ॥ दीं थो कू कू कू कू कू नि क य  
रि नि वि क नान स द स द न रु न स द ॥ ३ ॥ ॥ दीं











ॐ यतद्विष्णुसुवतव। अथ नृत्तमनरीम। कववागिनिष्ठा।  
यस्या नूयुगिषूयुक्ता। लघ्वधिकीयन्ति। उवतानि विष्णु।  
॥ ॐ तिमनुजं शुद्धिं विरिमनुय ॥ ॥ ॐ ज्ञानार्कयज्ञ  
महः। सुगंधियद्विवर्त्तनी। नूयुक्तामिव वन्त्यनात्सुथाम्  
दीयमानात्तान् ॥ २ ॥ ॐ तिमनुजं मत्स्यं विरिमनुय ॥

ॐ यद्विष्णुः। यवर्त्तनीयं सदायन्ति। सुवयं। दिवीवयं।  
वातनी ॥ १ ॥ तद्विष्णुः। विष्णुवाजागृवागुं स ॥ समित्य  
तं विष्णुयं सवर्त्तनीयं ॥ २ ॥ ॐ तिमनुजं यनं मूढानरिम  
नुय ॥ ॥ ॐ तिमनुजं यनं ॥ ॥



॥ यवश्चात्वार्यं च मूदायि गमत् ॥ सूरनचठवर्गं च मत्स्यं ॥  
खनमवचायानिमदुतिविखाताय च मूदाः यकीर्तिता ॥ य  
श्च मूदावीजानि ॥ दादीं क्रीडित ॥ ॥ यवनमस्तुत्यमानस  
यूजाकुर्यात् ॥ लैरुयैवैव ॥ शूर्वयत्सह गधन पृथ्वीकृतमन  
ख धूधनवायु दीपनतजानननसंपूनः ॥ ॥ इति षष्ठं ॥

तज्ज्ञानितश्च माह्वय ॥ मूगुष्टतज्ज्ञानिमश्च मासिनसि ॥ मूगु  
ष्टमित्तरवासे ॥ मूगुष्टिजियानकवव ॥ तज्ज्ञानीमश्च मासूनासि  
काश्च मश्च ॥ मूगुष्टतज्ज्ञानितात्तकय ॥



१ अथ ग्रहणयुग्मवर्गसंकल्य ४ यथा ॐ श्रुत्यादिना  
इयमनिगाकय दिवाकयवा इमकगम ४ धीश्रुमकदव  
समाश्रुमकयवताया श्रुमकमनुसिद्धिकाभायसादि  
विमकययमं अयनृययुग्मवर्गसंकल्य ४ यथा ॐ श्रुत्यादिना  
कल्यअयत् ॥ तदिनततयवदिनवात्मानादिकं विधाय

ॐ श्रुत्यादि श्रुमकगम ४ धीश्रुमकदव ४ श्रुमक  
मूकमनुसं कृततद्ग्रहणकाल ४ यत् संख्याजय तद  
गमिगहाम तदगमिगतयत् तदगमिगलिषक तदगमि  
गवाकगका अनकमविष्टकं विधाय ४ यत् संकल्यहाम  
कुर्यात् ॥ ददिहमदिकलुपुर्ववत् ॥ ११ ॥ गुरु रवतु सर्वदा ॥



